वैदिक साहित्य

Name :- Sani Kumari
class :- BA III year
Deptt :- Sanskrit

देवता

'देव' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए निरुक्तकार यास्क ने लिखा है : 'देवो दानाद्वा द्योतनाद्वा दीपनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा' देवता अपने भक्तों को प्रकाश तथा ज्ञान देने के साथ ही उनकी इच्छाओं के भी पूरक हुआ करते हैं। निरुक्तकार ने इन देवों की सत्ता का तीन रूपों में विभाजन किया है —"तिस्त्र एव देवता इति नैरुक्ताः — अग्नि पृथ्वीस्थानः, वायुर्वेन्द्रो वान्तरिक्षस्थानः, सूर्यो द्युस्थानः" अर्थात एक पृथ्वीस्थानीय अग्नि, सोम, आदि, दूसरे अन्तरिक्ष स्थानीय वायु, इन्द्रादि, तीसरे द्युस्थानीय सूर्य सविता आदि।

प्राकृतिक आधार पर देवों की संख्या 33 मानी गयी है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में ग्यारह-ग्यारह देवों के समुदाय का उल्लेख मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में भी आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, द्यौ तथा पृथ्वी को मिलाकर 33 देवों का उल्लेख मिलता है।

अग्नि सूक्त

प्रभाव और विस्तार की दृष्टि से अग्नि को ऋग्वेद में दूसरा स्थान प्राप्त है। 200 सूक्तों में अग्नि की स्तुति की गयी है। इसके ऋषि मधुच्छन्दा विश्वामित्र हैं। वैदिक मन्त्रों में अग्नि की तीन प्रमुख विशेषता बतायी गयी है — (i) नैतिक शक्ति में सम्पन्न होना (ii) यज्ञ की आहुतियों को ग्रहण करना और (iii) तेज एवं प्रकाश का अधिष्ठाता होना। अग्नि को जातवेदाः कहा गया है अर्थात वह ज्ञान का आगार है और उपासना करने वालों का कल्याण करता है। ऋग्वेद के मन्त्रों में अग्नि का विशेष सम्बन्ध यज्ञ की अग्नि से है, अतः इसको 'घृतपृष्ठ (घी की पीठ वाला), शोचिष्केश' (ज्वालाओं के बालों वाला) रक्तश्मश्रु (लाल दाढ़ी वाला) तीक्ष्ण तीक्ष्णदंष्ट्र (तेज दांतों वाला), रुक्मदन्त (स्वर्णिम दाँतों वाला) गृहपति, विश्वपति, दमूनस

इत्यादि नामों से जाना जाता है। अग्नि की जिह्वा द्वारा देवता हवियों का उपभोग करते हैं। यह देवताओं का मुँह है। ~~इसकी लपटें चमम~~ इसकी लपटें चमकती हैं। इससे प्रार्थना की जाती है कि वह हव्य का भोजन तथा सोमरस का पान करे। इसका शरीर ज्योतिष्मान है। यह पुरोहित है, यज्ञ का देव, ऋत्विक तथा नेता है। यह सूर्य और बिजली के समान चमकता है। यह रात्रि में दीप्त होता है और अन्धकार को भी भगा देता है। इसका रास्ता काला है। जब यह जंगलों को जलाता है तो इन्हें उसी प्रकार साफ कर देता है जैसे नाई दाढ़ी को। इसकी लपटों की ~~स्व~~ ध्वनि समुद्र की ~~ग~~ गर्जनाओं के समान है। इसका लाल रंग का धुआं आकाश तक उठती है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे आकाश को थामने के लिए स्तम्भ लगा हो। इसे 'धूमकेतु' भी कहा गया है। इसका रथ सोने के समान चमकता है और दो मनोजवा एवं मनोज्ञ वायुप्रेरित लाल घोड़ों द्वारा खींचा जाता है। वह द्यौस का पुत्र है तथा इसको पुरुष ~~सूक्त~~ में विराट पुरुष के मुख से उत्पन्न भी माना गया है ——

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद वायुरजायत, 'इन्द्र और अग्नि जुड़वा भाई हैं। अग्नि सूखी अरणियों से उत्पन्न होती ~~है~~ है जो उसकी माता है। सूखी समिधाओं से उत्पन्न होने वाला अग्नि उत्पत्ति काल में ही अपने माता-पिता का वध कर देता है। अग्नि को दश कन्याओं से उत्पन्न भी कहा गया है ये दश कन्याएं मनुष्य की दश अंगुलियां हैं। इसको 'सहसपुत्र' भी कहा गया है क्योंकि अग्नि को उत्पन्न करने के लिए मनुष्य को जोर लगाना पड़ता है। वह आकाश में उत्पन्न हुआ और ~~मातरि~~ मातरिश्वा (वायु) द्वारा पृथ्वी पर लाया गया। सूर्य भी अग्नि का एक रूप है। अग्नि के दो स्थान बताये गये हैं द्युलोक तथा पृथ्वी लोक।

यह मानवीय जीवन को धार्मिक सफल बनाता है इसलिए इसको अतिथि और गृहपति भी कहा जाता है। अग्नि को अनेक नामों से पुकारा जाता है — यविष्ठ (सदा युवा रहने वाला) शुक्र (सदा पवित्र रहने वाला) वनस्पति (वनस्पति तथा औषधियाँ) दमूनस (घर का जनमित्र) आदि। यह जो कि इन इन्द्र का सहायक करता है वायु ज्योतिर्मय है। यह हवियों को देवताओं तक पहुँचाने का काम सम्पादन करता है। प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने घर में यह प्रकाशमान है। सभी इसकी स्तुति करते हैं क्योंकि यह पापनाशक है। यह यज्ञ का साधक तथा पुत्र-पौत्रों को देने वाला है। अग्नि आर्यों का प्रमुख देवता है और इसके बिना कोई धार्मिक कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता है।

—— × —— × ——